Volume: 1 Issue: 14 Pages: 100-106

International Journal of Research in Academic World

E-ISSN: 2583-1615
Impact Factor: 4.714

Received: 25/September/2022 Int. J Res. Acad. World. 2022; 1(14):100-106 Accepted: 27/October/2022

बाल्मिकी जातियों में सफाई कर्मियों की कार्यप्रणाली के स्वरुप का सामाजिक अध्ययनरू बाबल नगरपालिका के संदर्भ में

[*1]Deepak Kumar

[*1]Ph.D. Student, Department of Sociology, School of Social Sciences, Indira Gandhi National Open University, New Delhi, India.

सारांश

अनुसूचित जाति के अंतर्गत आने वाली बाल्मिकी जाति, जिसे हरियाणा, बाबल ब्लाक के ग्रामीण क्षेत्रों में जमादार, भंगी, मेहतर, चूहड़ा, आदि और शहरी क्षत्रों में भंगी और चूहड़ा, आदि जातिगत नामों से जाना, पहचाना जाता है। सर पर मैला ढोने, हाथ से मैला सफाई (मैनुअल स्केवेंजिंग), ओपन ड्रेन एवं सेप्टिक टैंकों की सफाई, रेलवे ट्रेकों पर बिखरे मल दृ मूत्र को साफ करना, सीवर की सफाई करना, विष्ठा (मल) उठाना, घरों, दफ्तरों, नालियों, सड़कों और अस्पतालों की गन्दगी की सफाई आदि बाल्मिकी जाति के सदस्य श्रम के रूप में करते रहे हैं जो कि पीढ़ी दर पीढ़ी परंपरागत रूप हस्तांतरित होते रहे हैं, किन्तु स्वतंत्रता के बाद लोकतंत्र में सबको समानता मिली और सबको बराबरी का काम करने का हक प्राप्त हुआ और सफाई का कार्य शहरों में नगरपालिकाओं द्वारा कराया जाता है, इसी संदर्भ में शोधार्थी ने बाबल नगर पालिका में कार्यरत सफाई कर्मचारियों पर एक अध्ययन करने का प्रयास किया है कि आजादी के 75 वर्ष बाद बाल्मिकी जाति के सदस्य सफाई कार्य से किस स्वरुप में जुड़े हुए हैं, इनके परिवारों, शैक्षिक स्तर, सरकारी सुविधाओं, कृषि भूमि पर अधिकार, जैसे मुद्दों के स्वरुप को समझने का प्रयास किया है। अध्ययन के लिए 40 सफाई कर्मचारीयों को उत्तरदातायों के रूप में चुना गया है।

मूल शब्दः बाल्मिकी जाति, व्यावसायिक पद विवरण, व्यावसायिक स्थिति विवरण, कृषि भूमि अधिग्रहण वितरण, शहरी और ग्रामीण पृष्ठभूमि आदि।

प्रस्तावना

भारतीय समाज के जातिय सामाजिक संस्तरण में जो की सवसे निचले पायेदान पर आती है वह है अनुसूचित वर्ग के अंतर्गत आने वाली वाल्मीकि जाति, जिसे हम अलग अलग स्थानों पर अलग नामों से जानते हैं, जैसे–वाल्मीकि, मेहतर, भंगी, चूहड़ा, हरिजन, लालबेगी, छुआरा, नीरा, हाडी, पाकी, थोटटी, इत्यादि शामिल हैं, और आजकल इन्हें स्वीपर भी कहा जाता। किन्तु बाबल ब्लाक के ग्रामीण क्षत्रों में इनको जमादार, भंगी, मेहतर, चूहड़ा, आदि और बाबल ब्लाक के शहरी क्षत्रों में अधिकांशत भंगी और चूहड़ा, आदि जातिगत नामों से इनको जाना और पहचाना जाता है। सर पर मैला ढोने या हाथ से मैला सफाई (मैनुअल स्केवेंजिंग) के अतिरिक्त भी कुछ अन्य कार्य ऐसे हैं, जिन्हें इस जाति के कार्यों से जोड़कर देखा जा सकता है। इन कार्यों में सम्मिलित हैं जैसे कि दृ ओपन ड्रेन एवं सेप्टिक टैंकों की सफाई का काम, रेलवे ट्रेकों पर बिखरे मल दृ मूत्र को साफ करना, सीवर आदि की सफाई करना, विष्ठा (मल) उठाना, घरों, दफ्तरों, नालियों, सड़कों और अस्पतालों की गन्दगी की सफाई भी अधिकांशत भंगी जाति के लोगों के द्वारा ही की जाती है। इस जाति के लोगों के लिए लिए समाज में अलिखित रूप से यह माना जाता है, उपरोक्त कार्य एवम् श्मशान में शवों को दफन करना, अपराधियों को फांसी पर लटकाना, रात में चोरों को पकड़ना, यह सभी इसी जाति में जन्मे लोगों के कार्य हैं। भारत देश में सिर पर मैला ढोने की प्रथा से जुड़े सरकारी आंकडें यह बताते हैं कि मौजूदा समय में तकरीबन डेढ़ लाख लोग देश में इस कार्य को एक पेशे के रूप में कर रहे हैं। इस कार्य में महिलाएं और पुरुष दोनों सम्मिलित हैं। हालांकि देश के कुछ राज्य इससे मुक्त हो चुके हैं, (ऐसा सरकारी दावा है) लेकिन गैर दृ सरकारी अनोपचारिक आंकड़ो के अनुसार देश में करीब दस लाख लोग प्रत्यक्ष दृ अप्रत्यक्ष रूप से मैला ढोने की प्रथा से जुड़े हैं। देश के दस राज्यों में अब भी यह प्रथा आस्तिव में है। सर्वाधिक गंभीर स्थिति उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों की मानी जाती है। उत्तर प्रदेश में जहाँ सिर पर मैला ढोने वालों की संख्या सवसे ज्यादा है वहीं "राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग" के आंकड़ो के अनुसार मध्य प्रदेश के 16 जिलों में आज भी इस प्रथा की व्यापकता देखने को मिलती है। उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के आलावा बिहार, झारखंड, हरियाणा, कर्नाटक, महाराष्ट्र, नागालैण्ड, उत्तराखण्ड, एवं राजस्थान देश के वे राज्य हैं, जहाँ अभी इस प्रथा का वजूद कायम है, और यह कार्य इसी जाति के लोगों के द्वारा किया जा रहा है। (शर्मा जी. एल., 2015: 51)

इस जाति के लोगों की दशा आज भी समाज में निम्नतम दर्जे की है और समाज में सबसे घृणित कार्य यही भंगी कहलाने वाली जाति के लोगों द्वारा किये जाते हैं। आजादी के बाद भी इन्हें अछूत से छूत बनाने के लिये सरकारों की ओर से कई रचनात्मक कदम उठाये गए, किन्तु फिर भी इसका अंत नहीं हुआ। अलबत्ता शुरुआत में तो नगर निगमों, नगरपालिकाओं और सभी स्थानीय निकायों में घरों, दफ्तरों, नालियों, सड़कों और अस्पतालों की गन्दगी की सफाई के लिये इन्हीं लोगों को सरकार द्वारा नियोजित किया जाने लगा। ये कहा जाये तो अनुचित नहीं होगा कि इन सभी घृणित समझे जाने वाले सफाई कार्यों में शतप्रतिशत इसी जाति के लोगों को नियुक्तियॉ दी जाने लगी। किन्तु हमारे भारतीय संविधान की मूल भावना और आरक्षित वर्ग के लिये जरुरी सामाजिक न्याय की मूल अवधारणा यह है कि राज्य किसी भी व्यक्ति को कानून के समक्ष समानता से वंचित नही रख सकते हैं,

***Corresponding Author:** Deepak Kumar

अथवा कानून की सुरक्षा सभी को समान रूप से उपलब्ध होगी। अनुच्छेद 14 और 15 में समानता की अवधारणा का प्रवर्तन इस ढंग से है कि यह अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों की परिस्थितियों से निश्चित रूप से सम्बन्धित है। जिसके अनुसार राज्य धर्म, नस्ल, जाति, लिगं जन्मस्थान या इनमें से किसी एक के आधार पर बिल्कुल भेदभाव नही करेगा। कोई भी किसी भी नागरिक को केवल धर्म, नस्ल, जाति, लिगं, जन्म स्थान के आधार पर बिल्कुल भेदभाव नही करेगा। दुकानों, सार्वजनिक रेस्तराओं, होटलो तथा सार्वजनिक स्थलों पर जैस–कुओं, तलाबों, स्नानघाटों, सार्वजनिक होटलों जिनका उपयोग सार्वजनिक प्रयोग के लिए समर्पित है पर किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं होगा। इस अनुच्छेद के अनुसार किसी भी राज्य को महिलाओं और बच्चों के लिये विशेष प्रावधान बनाने से कोई वर्जित नही कर सकेगा। इसी संदर्भ में शोधार्थी ने बाबल नगर पालिका में कार्यरत सफाई कर्मचारियों पर एक लघु अध्ययन करने का प्रयास किया है जिसमें अध्ययन के लिए 40 सफाई कर्मचारीयों को उत्तरदातायों के रूप में चुना गया है।

बाबल शहर एक संक्षिप्त परिचयः बावल हरियाणा के रेवाड़ी जिले में एक नगरपालिका समिति शहर है। बावल शहर को 13 वार्डों में बांटा गया है, जिसके लिए हर 5 साल में चुनाव होते हैं। बावल म्यूनिसिपल कमेटी की जनसंख्या 16,776 है, जिसमें से 8,828 पुरुष हैं जबकि 7,948 महिलाएं हैं, जैसा कि जनगणना भारत 2011 द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार है (क्पेजतपबज ब्मदेने भ्दकइववा त्मूंतप 2011)।

0–6 आयु वर्ग के बच्चों की जनसंख्या 2346 है जो बावल (एमसी) की कुल जनसंख्या का 13.98% है। बावल नगरपालिका समिति में, महिला लिंग अनुपात 879 के राज्य औसत के मुकाबले 900 है। इसके अलावा बावल में बाल लिंग अनुपात 834 के हरियाणा राज्य औसत की तुलना में लगभग 812 है। बावल शहर की साक्षरता दर राज्य के औसत 75.55% से 78.59% अधिक है। बावल में, पुरुष साक्षरता लगभग 87.35ः है जबकि महिला साक्षरता दर 69.03% है (प्इपक)।

बावल म्यूनिसिपल कमेटी का कुल प्रशासन 2,962 से अधिक घरों में है, जिसमें यह पानी और सीवरेज जैसी बुनियादी सुविधाएं प्रदान करता है। यह नगरपालिका समिति की सीमा के भीतर सड़कें बनाने और अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाली संपत्तियों पर कर लगाने के लिए भी अधिकृत है (प्इपक)।

आयुः आयु समूह किसी भी व्यक्ति की एक महत्वपूर्ण विशेषता है, अपनी आयु के अनुसार, उन्हें अपने द्वारा किये जा रहे श्रम के विवरण और जानकारी को प्राप्त किया सके की वह अपने काम के प्रति कितने जागरूक हैं। उत्तरदाताओं का आयु वितरण निम्न तालिका में दिया गया है–

तालिका संख्या 1: बाबल नगर पालिका में चुने गए उत्तरदाताओं की आयु का विवरण

क्रम संख्या	आयु (वर्ष में)	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	21–40	28	70.0%
2.	41–50	10	25.0%
3.	50 वर्ष से अधिक	02	5.0%
	कुल	40	100%

स्रोतः उपरोक्त सारणी के आँकड़े शोधार्थी ने प्राथमिक अनुसन्धान से प्राप्त किये हैं।

उपरोक्त तालिका यह दर्शाती है कि उत्तरदाताओं का 70.0% (21–40) आयु वर्ग से संबंधित है, 25.0% (41–50) आयु वर्ग से संबंधित है, मात्र 5.0% 50 वर्ष से अधिक आयु वर्ग से संबंधित है, इस प्रकार बहुसंख्यक, उत्तरदाताओं का 70.0% (21–40 वर्ष) आयु वर्ग के हैं और सबसे कम संख्या 5.0% 50 वर्ष से ऊपर के हैं।

धर्मः धर्म एक और महत्वपूर्ण चर है, इसलिए उत्तरदाताओं का धार्मिक वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार दिया गया है।

तालिका संख्या 2: बाबल नगर पालिका में चुने गए उत्तरदाताओं की धार्मिक पृष्ठभूमि

क्रम संख्या	धार्मिक समूह	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	हिन्दू	40	100.00%
2.	मुस्लिम	0	0.0%
	कुल	40	100%

स्रोतः उपरोक्त सारणी के आँकड़े शोधार्थी ने प्राथमिक अनुसन्धान से प्राप्त किये हैं।

उपरोक्त तालिका बताती है कि उत्तरदाताओं का 100% हिंदू धर्म से संबंधित हैं और मुस्लिम धर्म अथवा अन्य और किसी धरम से संबंधित कोई भी व्यक्ति सफाई कर्मचारी के रूप में बाबल नगर पालिका में कार्यरत नहीं है। इस प्रकार सभी उत्तरदाता 100% हिंदू धर्म से संबंधित है, और किसी भी धर्म के व्यक्ति ना ही सफाई कर्मचारी का काम करते हैं और ना ही उत्तरदाता के रूप में लिए गए हैं।

जातिः जाति समाज में व्यक्तियों की एक अन्य मुख्य विशेषता है, जो विशेष रूप से व्यक्ति की स्थिति को सामाजिक और व्यावसायिक दोनों क्षेत्रों में पहचान बनाती है। उत्तरदाताओं का जातिगत वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार दिया गया है।

तालिका संख्या 3: बाबल नगर पालिका में चुने गए उत्तरदाताओं का जातिगत वितरण

क्रम संख्या	जाति के प्रकार	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	वाल्मीकि	32 (स्थायी–2)	80.0%
2.	चमार	02	5.0%
3.	ओ.बी.सी.	6(स्थायी–1)	15%
4.	ठाकुर (क्षत्रिय)	00	00%
5.	ब्राह्मण–बनिया	00	0%
6.	मुस्लिम (जाति)	00	0%
	कुल	40	100%

स्रोतः उपरोक्त सारणी के आँकड़े शोधार्थी ने प्राथमिक अनुसन्धान से प्राप्त किये हैं।

उपरोक्त तालिका बताती है कि उत्तरदाताओं का 80.0% वाल्मीकि जाति के सदस्य हैं, 5.0% चमार जाती के सदस्य हैं, 15% अन्य पिछड़ा वर्ग के सदस्य हैं, और मात्र 2.5% ठाकुर जाति के सदस्य हैं। शौधार्थी ने अपने क्षेत्र अध्ययन के दौरान यह पाया कि मात्र वाल्मीकि जाति के सदस्य ही यहाँ सफाई के कार्य करते हैं बाकी सभी अन्य कार्यो करते हैं जैसे दृ कि बिजली ठीक करना, चपरासी का काम करवाना, चाय आदि की व्यवस्था करवाना आदि। इस प्रकार अधिकांशत उत्तरदाता 80.0% वाल्मीकि जाति के सदस्य हैं जो कि मात्र सफाई का कार्य और मृत पशु और लावारिस लाश उठाने का काम करते हैं, मात्र 2.5% अर्थात एक सदस्य क्षत्रिय जाती के सदस्य हैं।

परिवार का प्रकारः सामाजिक परिवेश में परिवार और नातेदारी एक महत्वपूर्ण चर है, जो कि समाज में हो रहे सामाजिक परिवर्तन के लिए जिम्मेदार एक महत्वपूर्ण चर है। इसलिये उत्तरदाताओं का

पारिवारिक स्वरुप कैसा है यह समझने का प्रयास निम्नलिखित तालिका में दिया गया है।

तालिका संख्या 4: बाबल नगर पालिका में चुने गए उत्तरदाताओं के परिवारों के प्रकार का विवरण

क्रम संख्या	परिवार का प्रकार	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	संयुक्त परिवार	10	25:
2.	एकल परिवार	30	75:
3.	अन्य	——	——
	कुल	40	100:

स्रोत: उपरोक्त सारणी के आँकड़े शोधार्थी ने प्राथमिक अनुसन्धान से प्राप्त किये हैं।

उपरोक्त तालिका बताती है कि उत्तरदाताओं के परिवारों का 25% हिस्सा संयुक्त इकाई के रूप में निवास करता हैं किन्तु यह संयुक्त इकाई मात्र एक घर में साथ साथ रहती है और इन संयुक्त परिवारों के सभी सदस्यों की अपनी कमाई और रसोई अलग अलग है अर्थात यह मात्र सपअपदह नदपज में साथ रहती है किन्तु बववापदह नदपज में यह अलग अलग है। इसी के साथ उत्तरदाताओं से प्राप्त आँकड़ों के अनुसार 75% उत्तरदाता मात्र एकल परिवारों के साथ अपना जीवन यापन कर रहे हैं। इस प्रकार अधिकांश उत्तरदाताओं का 75% हिस्सा एकल परिवारों के रूप में और बहुत छोटी संख्या, 25% संयुक्त परिवारों (वदसल सपअपदह नदपज) के रूप मई अपना जीवन यापन कर रहे हैं।

शिक्षा: किसी भी व्यक्ति के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण कारक है, वर्तमान समय में जो जीवन के अन्य पहलूओं को प्रभावित कर सकता है, केवल शिक्षा लोगों को सामाजिक असमानता, गरीबी के खिलाफ लड़ने और एक व्यक्ति की अन्य आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करता है। उत्तरदाताओं की शैक्षिक स्तर निम्न तालिका में दिया गया है।

तालिका 5: बाबल नगर पालिका में चुने गए उत्तरदाताओं की शैक्षिक स्तर का विवरण

क्रम संख्या	शैक्षिक स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	निरक्षर	30	75%
2.	पांचवी पास तक	08	20%
3.	आठवीं पास तक	01	2.5%
4.	दसवीं पास तक	01	2.5%
5.	बाहरवीं पास और ऊपर	00	0%
	कुल	40	100%

स्रोत: उपरोक्त सारणी के आँकड़े शोधार्थी ने प्राथमिक अनुसन्धान से प्राप्त किये हैं।

उपरोक्त तालिका बताती है कि उत्तरदाताओं का 75% निरक्षर जो कि सफाई कार्य के श्रम में कार्यरत है, उत्तरदाताओं का 20.0% पांचवी पास तक शिक्षित है, उत्तरदाताओं का 2.5% आठवीं पास और 2.5% दसवीं पास तक शिक्षित है। इस प्रकार अधिकांश उत्तरदाताओं 75% निरक्षर हैं, और मात्र 2.5% अर्थात एक उत्तरदाता आठवीं पास और 2.5% अर्थात एक दसवीं पास है। इसी के साथ शोधार्थी ने अपने अध्ययन के दौरान यह भी पाया कि पुरे नगर पालिका बाबल में जो भी सफाई कर्मचारी सफाई के कार्य में कार्यरत हैं उनमें अधिकाशत निरक्षर ही हैं।

पृष्ठभूमि: समाज में किसी भी व्यक्ति की पृष्ठभूमि ग्रामीण क्षेत्र की है अथवा वह शहर में निवास करता है यह अत्यंत महत्वपूर्ण तथ्य है जिससे समाज में घटने वाली बहुत से क्षेत्र पख्रभावित होते हैं, उत्तरदाताओं की पृष्ठभूमि का विवरण निम्न तालिका में दिया गया है।

तालिका संख्या 6: बाबल नगर पालिका में चुने गए उत्तरदाताओं की शहरी और ग्रामीण पृष्ठभूमि का विवरण

क्रम संख्या	पृष्ठभूमि	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	ग्रामीण	10	25%
2.	शहरी	30	75%
3.	मेट्रोपोलिटन शहर (दिल्ली, गुरुग्राम, फरीदाबाद)	00	0%
	कुल	40	100%

स्रोत: उपरोक्त सारणी के आँकड़े शोधार्थी ने प्राथमिक अनुसन्धान से प्राप्त किये हैं।

उपरोक्त तालिका बताती है कि उत्तरदाताओं की 75% पृष्ठभूमि स्थानीय अर्थात वह बाबल शहर में ही निवास करते हैं, तथा 25% उत्तरदाता ग्रामीण पृष्ठभूमि से आते हैं, जो कि बाबल शहर के पास ही किसी गाँव से अपनी नौकरी के लिए शहर आते जाते हैं। उत्तरदाताओं में कोई भी गुरुग्राम, दिल्ली, या फरीदाबाद जो कि बाबल शहर के एकदम पास हैं उनसे नहीं आते हैं। इस प्रकार 75% उत्तरदाताओं की पृष्ठभूमि स्थानीय अर्थात वह बाबल शहर की है, तथा 25% उत्तरदाताओं की पृष्ठभूमि ग्रामीण है।

व्यवसाय: व्यवसाय एक महत्वपूर्ण कारक है जो की समाज में बहुत से महत्वपूर्ण पहलुओं को प्रभावित करता है। उत्तरदाताओं का व्यावसायिक वितरण निम्नलिखित तालिका में दिया गया है।

तालिका संख्या 7: बाबल नगर पालिका में चुने गए उत्तरदाताओं का व्यावसायिक स्थिति विवरण

क्रम संख्या	व्यावसायिक स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	स्थायी	03	7.5%
2.	अस्थायी	12	30%
3.	ठेकेदारी (अस्थायी)	25	62.5%
	कुल	40	100%

स्रोत: उपरोक्त सारणी के आँकड़े शोधार्थी ने प्राथमिक अनुसन्धान से प्राप्त किये हैं।

उपरोक्त तालिका बताती है कि उत्तरदाताओं की 62.5% व्यावसायिक स्थिति ठेकेदारी (अस्थायी) है, 30% बाबल नगर पालिका की तरफ से अस्थायी सफाई कर्मचारी के तौर पर कार्यरत हैं, तथा मात्र 7.5% स्थायी सरकारी सफाई कर्मचारी के रूप में काम कर रहे हैं। इस प्रकार अधिकांश उत्तरदाताओं की व्यावसायिक स्थिति 62.5% ठेकेदारी (अस्थायी) है, और मात्र 7.5% स्थायी कर्मचारी के रूप में कार्यरत हैं।

तालिका संख्या 8: बाबल नगर पालिका में चुने गए उत्तरदाताओं का व्यावसायिक पद विवरण

क्रम संख्या	व्यावसायिक वितरण	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	स्वीपर	38	95%
2.	सीवर मैन	02	5%
	कुल	40	100%

स्रोत: उपरोक्त सारणी के आँकड़े शोधार्थी ने प्राथमिक अनुसन्धान से प्राप्त किये हैं।

उपरोक्त तालिका बताती है कि उत्तरदाताओं का 95% हिस्सा स्वीपर की हैसियत से कार्यरत है, बाकी 5% सफाई कर्मियों की तादात मैन के रूप में काम कर रही है। शोधार्थी ने अपनी शोध के दौरान यह पाया की बाबल शहर में सीवर व्यवस्था अत्याधिक कम होने के कारण यह मात्र दो ही सीवर मैन से काम चल जाता है जिस कारण अधिकतर सफाईकर्मी स्वीपर के रूप में ही काम कर रहे हैं। इस प्रकार अधिकांश उत्तरदाता 95% स्वीपर के रूप में और मात्र 5% उत्तरदाता सीवर मैन के रूप में कार्यरत हैं।

भूमि जोत क्षेत्र स्वामित्वः भूमि जोत क्षेत्र स्वामित्व एक महत्वपूर्ण चर है जो की प्रत्येक समाज में और हर एक परिवार का मानक निर्धारित करती है। भूमि जोत क्षेत्र स्वामित्व रखने वाले उत्तरदाताओं का विवरण निम्नलिखित तालिका में दी गई है।

तालिका संख्या 9: बाबल नगर पालिका में चुने गए उत्तरदाताओं का पैत्रक कृषि भूमि अधिग्रहण वितरण

क्रम संख्या	भूमि अधिग्रहण	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	कोई भूमि नहीं	40	100%
2.	1–04 कीला	00	0%
3.	04–06 कीला	00	0%
4.	06–08 कीला	00	0%
5.	08 कीला और ऊपर	00	0%
	कुल	40	100%

स्रोतः उपरोक्त सारणी के आँकड़े शोधार्थी ने प्राथमिक अनुसन्धान से प्राप्त किये हैं।

उपरोक्त तालिका बताती है कि उत्तरदाताओं का 100% भूमि विहीन हैं चाहें वह जिनकी जो कि आज भी गाँव में निवास कर रहे हैं और वह भी जो कि स्थानांतरित होकर काम करने के लिए बाबल शहर में आकर बस गए हैं। शोधार्थी ने अपनी शोध के दौरान यह पाया की किसी भी उत्तरदाता के दादा के पास कोई जमीन नहीं थी। विनोद वाल्मीकि (बदला हुआ नाम) ने बताया कि "साहब यदि हमारे दादा, परदाताओं के पास यदि कृषि की भूमि होती तो हम यह घिनौना काम क्यों करते, यह काम तो हम मजबूरी में कर रहे हैं कोई खुशी से नहीं"। इस प्रकार सभी उत्तरदाता 100% की पृष्ठभूमि कृषि भूमि से रहित पृष्ठभूमि है।

तालिका संख्या 10: बाबल नगर पालिका में चुने गए उत्तरदाताओं की प्रतिमाह आय के स्तर का विवरण

क्रम संख्या	आय का स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	5000 से कम	00	0%
2.	5000–7000	00	0%
3.	7000–10000	37	92.5%
4.	10,000 और ऊपर	03	7.5%
	कुल	40	100%

स्रोतः उपरोक्त सारणी के आँकड़े शोधार्थी ने प्राथमिक अनुसन्धान से प्राप्त किये हैं।

उपरोक्त तालिका बताती है कि उत्तरदाताओं की 92.5% आय का स्तर 7000 दृ 10000 रूपये प्रतिमाह मात्र है, तथा 7.5% उत्तरदाता अर्थात स्थायी सफाई कर्मचारियों की आय का स्तर 10,000 रूपये से अधिक है। इस प्रकार अधिकांश उत्तरदाता 92.5%, 7000 दृ 10000 प्रतिमाह रूपये में सफाई कार्य कर रहे हैं और मात्र 7.5% उत्तरदाता 10,000 रूपये प्रतिमाह की आय के साथ कार्यरत हैं।

जागरूकता और जागरूकता का स्रोतः जागरूकता एक महत्वपूर्ण कारक है, जो की समाज में लोगों की चेतना और जागरूकता के स्रोत को दर्शाती है, जो उनके जीवन में होने वाले परिवर्तनों को विचार प्रदान करती हैं, जो कि समाज में विभिन्न प्रकार के व्यवसायों, श्रमों और सेवाओं का महत्व और उनमें क्या अंतर है के प्रति उनके बदलते दृष्टिकोण को दर्शाते हैं।

तालिका संख्या 11: बाबल नगर पालिका में चुने गए उत्तरदाताओं की सरकार के द्वारा प्रदान की जा रही सुविधाओं के प्रति जागरूकता

क्रम संख्या	सुविधाओं के प्रति जागरूकता	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	10	25%
2.	नहीं	30	75%
	कुल	40	100%

स्रोतः उपरोक्त सारणी के आँकड़े शोधार्थी ने प्राथमिक अनुसन्धान से प्राप्त किये हैं।

उपरोक्त तालिका बताती है कि उत्तरदाताओं की 75% तादात सरकार के द्वारा प्रदान की जा रही इनके काम के दौरान सुविधाओं के प्रति जागरूकता ही नहीं रखते हैं, मात्र 25% सफाई कर्मचारी ही इस जानकारी से अवगत हैं कि उनके लिए काम के दौरान कौन कौन सी सुविधाओं को दिया जाता है, ताकि सफाई करते समय संक्रमण आदि से बचा जा सके। शौधार्थी ने अपने अध्ययन के दौरान यह पाया कि इन सफाई कर्मचारियों को काम के दौरान बाबल नगर पालिका के द्वारा कोई भी सुविधा प्रदान नहीं की जाती है जिससे की इनकी संक्रमणीय बीमारियों से सुरक्षा हो सकें। इस प्रकार 75% सरकार के द्वारा प्रदान की जा रही इनके काम के दौरान सुविधाओं के प्रति जागरूकता ही नहीं हैं, मात्र 25% सफाई कर्मचारी ही ऐसे हैं कि इस महत्वपूर्ण जानकारी के प्रति जागरूक हैं।

तालिका संख्या 12: बाबल नगर पालिका में चुने गए उत्तरदाताओं की सरकार के द्वारा प्रदान की जा रही सुविधाओं के प्रति जागरूकता जागरूकता का स्रोत

क्रम संख्या	जागरूकता का स्रोत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	टीबी, रेडियो	00	0%
2.	अखबार, पत्रिका, आदि	02	5%
3.	जागरूकता कैम्प	00	20%
4.	व्हाट्सअप, फेसबुक, आदि	08	0%
5.	अन्य	00	0%
	कुल	10	25%

स्रोतः उपरोक्त सारणी के आँकड़े शोधार्थी ने प्राथमिक अनुसन्धान से प्राप्त किये हैं।

उपरोक्त तालिका बताती है कि मात्र 25% उत्तरदाता ही सरकार के द्वारा प्रदान की जा रही सुविधाओं के प्रति जागरूकता रखते हैं, इन 20% जागरूकता रखने वाले उत्तरदाताओं की जागरूकता का स्रोत सरकार के द्वारा समय समय पर लगाया गया जागरूकता कैम्प है, 5% उत्तरदाताओं की जागरूकता का स्रोत अखबार, पत्रिका है। इस प्रकार 20% उत्तरदाता जागरूकता कैम्प से

जागरूक हुए हैं और मात्र 5% अखबार और पत्रिका अर्थात प्रिंट मीडिया के माध्यम से जागरूक हुए हैं।

तालिका संख्या 13: बाबल नगर पालिका में चुने गए उत्तरदाताओं की सरकार के द्वारा उनके पुनर्वास हेतु प्रदान की जा रही योजनाओं के प्रति जागरूकता

क्रम संख्या	जागरूकता का स्रोत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	10	25%
2.	नहीं	30	75%
	कुल	40	100%

स्रोतः उपरोक्त सारणी के आँकड़े शोधार्थी ने प्राथमिक अनुसन्धान से प्राप्त किये हैं।

उपरोक्त तालिका बताती है कि उत्तरदाताओं की 75% तादात सरकार के द्वारा उनके पुनर्वास हेतु प्रदान की जा रही योजनाओं के प्रति जागरूकता ही नहीं रखते हैं। सरकार के द्वारा इनके पुनर्वास हेतु प्रदान की जा रही योजनाओं के प्रति जागरूकता रखने वाले उत्तरदाता मात्र 25% ही हैं। शौधार्थी ने अपने अध्ययन के दौरान यह भी पाया कि यह जो 25% सफाई कर्मचारियों अपने पुनर्वास हेतु प्रदान की जा रही योजनाओं के प्रति जागरूकता रखते हैं उनका कहना है की उन्होंने अपने पुनर्वास हेतु इन योजनाओं का उपयोग नहीं कर पाए हैं जिसका कारण वह बताते हैं, कि सरकारी प्रक्रिया इतनी लंबी होती है जिस को पूरा करते करते यह थक जाते हैं और हार कर बैठ जाते हैं इसलिए इनका कोई भी पुनर्वास नहीं हो पाता है। इस प्रकार 75% सरकार के द्वारा प्रदान की जा रही अपने पुनर्वास हेतु योजनाओं के प्रति जागरूकता ही नहीं रखते हैं, और मात्र 25% उत्तरदाता ही सरकार के द्वारा प्रदान की जा रही अपने पुनर्वास हेतु योजनाओं के प्रति जागरूकता ही रखते हैं।

तालिका संख्या 14: बाबल नगर पालिका में चुने गए उत्तरदाताओं की सरकार के द्वारा पुनर्वास हेतु प्रदान की जा रही योजनाओं के प्रति जागरूकता का स्रोत

क्रम संख्या	जागरूकता का स्रोत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	टीबी, रेडियो	00	0%
2.	अखबार, पत्रिका, आदि	00	0%
3.	जागरूकता कैम्प	10	25%
4.	व्हाट्सअप, फेसबुक, आदि	00	0%
5.	अन्य	00	0%
	कुल	10	25%

स्रोतः उपरोक्त सारणी के आँकड़े शोधार्थी ने प्राथमिक अनुसन्धान से प्राप्त किये हैं।

उपरोक्त तालिका बताती है कि मात्र 25% उत्तरदाता ही सरकार के द्वारा उनके पुनर्वास हेतु प्रदान की जा रही योजनाओं के प्रति जागरूकता रखने हैं, इन 20% उत्तरदाताओं की जागरूकता का स्रोत सरकार के द्वारा समय समय पर लगाया गया जागरूकता कैम्प है, और 5% उत्तरदाताओं की जागरूकता का स्रोत अखबार और पत्रिका आदि है। इस प्रकार 20% उत्तरदाता जागरूकता कैम्प से जागरूक हुए हैं, और मात्र 5% अखबार और पत्रिका अर्थात प्रिंट मीडिया के माध्यम से जागरूक हुए हैं।

तालिका संख्या 15: बाबल नगर पालिका में चुने गए उत्तरदाताओं के अनुसार समाज में उनके विकास के लिए महत्वपूर्ण कारक

क्रम संख्या	महत्वपूर्ण कारक	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	शिक्षा	10	25.0%
2.	सरकारी नौकरी	29	72.5%
3.	प्राइवेट नौकरी	00	25%
4.	अपना व्यवसाय	01	2.5%
5.	राजनीती में सक्रीय भागीदारी	00	0%
6.	अपनी जाति का मुख्यमंत्री अथवा प्रधानमंत्री होने पर	00	0%
	कुल	40	100%

स्रोतः उपरोक्त सारणी के आँकड़े शोधार्थी ने प्राथमिक अनुसन्धान से प्राप्त किये हैं।

उपरोक्त तालिका बताती है कि 72% उत्तरदाताओं का मानना है कि मात्र सरकारी नौकरी मिलने से ही समाज में उनका विकास हो सकता है, इसी के साथ 25% उत्तरदाताओं का मानना है, कि यदि हमारे समाज में अच्छी शिक्षा आ जाए तो हमारा विकास हो सकता है, क्योंकि मात्र शिक्षा ही हमारे समाज के आगे बड़ने का मार्ग है, किन्तु 2.5% उत्तरदाता यह स्वीकार करते हैं कि यदि हम कोई अपना व्यवसाय करें तो हमारे समाज का विकास हो सकता है। इस प्रकार 72% उत्तरदाता मानते हैं कि मात्र सरकारी नौकरी मिलने से ही हमारा विकास हो सकता, और 2.5% अर्थात एक उत्तरदाता यह मानता है कि यदि हम अपना व्यवसाय करें तो हमारा विकास हो पायेगा।

तालिका संख्या 16: बाबल नगर पालिका में चुने गए उत्तरदाताओं द्वारा प्राथमिकता देने वाला व्यवसाय

क्रम संख्या	व्यवसाय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	सफाई कार्य	30	75%
2.	मजदूरी	05	12.5%
3.	कृषि (खेतिहर मजदूरी आदि)	00	0%
4.	स्वयं का व्यवसाय	05	12.5%
	कुल	40	100%

स्रोतः उपरोक्त सारणी के आँकड़े शोधार्थी ने प्राथमिक अनुसन्धान से प्राप्त किये हैं।

उपरोक्त तालिका बताती है कि 75% उत्तरदाता सफाई कार्य करने को ही प्राथमिकता देते हैं, इसी के साथ 12.5% उत्तरदाता मानते हैं कि खुली मजदूरी को प्राथमिकता देते हैं, उनका मानना है, कि हमकों खुली मजदूरी में हमको अधिक आमदनी होती इसलिए हमको मात्र मजदूरी करनी चाहिए, किन्तु 12.5% का मानना है यदि हम कोई अपना व्यवसाय करें तो हमारा और हमारे समाज का अधिक विकास हो सकता हैं। इस प्रकार 75% उत्तरदाता सफाई कार्य को प्राथमिकता देते हैं, और मात्र 12.5% उत्तरदाता मजदूरी और कृषि (खेतिहर मजदूरी आदि) को प्राथमिकता देते हैं।

तालिका संख्या 17: बाबल नगर पालिका में चुने गए उत्तरदाताओं द्वारा अपने लिए सफाई कार्य के श्रम को प्राथमिकता देने का कारण

क्रम संख्या	प्राथमिकता देने का कारण	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	पीढ़ी गत पीढ़ी हस्तांतरित हो रहा है इसलिए स्वीकार करते हैं	21	25.0%
2.	समाज में यह मान्यता है की यह काम वाल्मीकियों के लिए ही बना है	05	72.5%
3.	यह काम आसानी से मिल जाता है	06	25%
4.	इस श्रम में कोई कठिनाई नहीं है	04	2.5%
5.	समाज में इस श्रम को करने वालों के लिए अधिक सम्मान प्राप्त है	00	0%
6.	बड़ी जातियों के सदस्यों के द्वारा मजबूर किया जाता है	04	0%
	कुल	40	100%

स्रोतः उपरोक्त सारणी के आँकड़े शोधार्थी ने प्राथमिक अनुसन्धान से प्राप्त किये हैं।

उपरोक्त तालिका बताती है कि अधिकांश 52% उत्तरदाता मानते हैं, की यह काम पीढ़ी गत पीढ़ी हमारे परिवारों के लिए हस्तांतरित हो रहा है इसलिए हम सफाई कार्य को श्रम के रूप में प्राथमिकता देते हैं, क्योंकि हम बचपन से ही अपने बाप दादाओं को यही काम करते हुए देख रहे हैं, इसी के साथ 12.5% उत्तरदाता यह स्वीकार करते हैं कि हम भी और हमारे बाप दादाओं के द्वारा यह माना जाता है कि यह काम हमारे करने के लिए ही बना है और यही हमारी नियति है इसलिए हमको ही यह काम करना है, 15: उत्तरदाता यह स्वीकार करते हैं कि सफाई काम गन्दा काम हैं किन्तु हमारे परिवारों के द्वारा सांस्कृतिक रूप से होता आ रहा है और इसको कोई अन्य जाति अथवा वर्ग के लोग करना पसंद नहीं करते हैं इसलिए हमको यह कार्य आसानी से मिल जाता है और हम इसी में लग जाते हैं, इसी के साथ 10% उत्तरदाता मानते हैं कि यह काम हमारे परिवारों के द्वारा हमेशा से किया जाता रहा है इसलिए हमारे लिए भी यह काम विरासत के रूप में मिलता है और हमको यही काम आसान लगने लगता है और आसानी से मिल भी जाता हैय तो हम यह काम करते हैं, किन्तु 10% उत्तरदाता मानते हैं कि कोई भी यह काम अपनी मर्जी से करना स्वीकार नहीं करेगा यह काम तो बड़ी जातियों के सदस्यों के द्वारा हमारी जातियों के सदस्यों के द्वारा जबरदस्ती करने पर मजबूर किया जाता है इसलिए हम यह काम करते हैं, कोई भी उत्तरदाता यह स्वीकार नहीं करता कि समाज में इस श्रम को करने वालों के लिए अधिक सम्मान प्राप्त है इसलिए हम इसको करना स्वीकार करते हैं, वल्कि सभी उत्तरदाता यह मानते हैं कि इस कार्य को करने वालों को समाज में कलंकित जीवन, अपमान, उत्पीड़न, भेदभाव ही मिलता है। इस प्रकार 52% उत्तरदाता मानते हैं, की यह काम पीढ़ी गत पीढ़ी हमारे परिवारों के लिए हस्तांतरित हो रहा है इसलिए हम सफाई कार्य को श्रम के रूप में प्राथमिकता देते हैं, और कोई भी उत्तरदाता यह स्वीकार नहीं करता कि इस काम को करने वालों को समाज में सम्मान मिलता है।

जाँच परिणाम

1. बहुसंख्यक उत्तरदाताओं का 70.0% (21–40 वर्ष) आयु वर्ग के हैं, और सबसे कम संख्या 5.0% 50 वर्ष से ऊपर के हैं।
2. सभी उत्तरदाता 100% हिंदू धर्म से संबंधित है।
3. अधिकांशत उत्तरदाता 80.0% वाल्मीकि जाति के सदस्य हैं, तथा 5.0% चमार जाति के सदस्य हैं।
4. अधिकांश उत्तरदाताओं का 75% हिस्सा एकल परिवारों के रूप में, 25% संयुक्त परिवारों (वदसल सपअपदह नदपज) के रूप मई अपना जीवन यापन कर रहे हैं।
5. अधिकांश उत्तरदाताओं 75% निरक्षर हैं, मात्र 2.5% आठवीं पास और 2.5% दसवीं पास है।
6. अधिकांशत 75% उत्तरदाताओं की पृष्ठभूमि स्थानीय बाबल शहर की है, तथा 25% उत्तरदाताओं की पृष्ठभूमि ग्रामीण है।
7. अधिकांश उत्तरदाताओं की व्यावसायिक स्थिति 62.5% ठेकेदारी (अस्थायी) है, और मात्र 7.5% स्थायी कर्मचारी के रूप में कार्यरत हैं।
8. अधिकांश उत्तरदाता 95% स्वीपर के रूप में और मात्र 5% उत्तरदाता सीवर मैन के रूप में कार्यरत हैं।
9. सभी उत्तरदाताओं 100% की पृष्ठभूमि कृषि भूमि से रहित पृष्ठभूमि है।
10. अधिकांश उत्तरदाता 92.5%, 7000–10000 प्रतिमाह रूपये में सफाई कार्य कर रहे हैं, और मात्र 7.5% उत्तरदाता 10,000 रूपये प्रतिमाह की आय के साथ कार्यरत हैं।
11. अधिकांश 75% उत्तरदाता सरकार के द्वारा प्रदान की जा रही इनके काम के दौरान सुविधाओं के प्रति जागरूकता ही नहीं हैं, मात्र 25% सफाई कर्मचारी ही ऐसे हैं कि इस महत्वपूर्ण जानकारी के प्रति जागरूक हैं।
12. इस प्रकार 20% उत्तरदाता जागरूकता कैम्प से जागरूक हुए हैं और मात्र 5% अखबार और पत्रिका अर्थात प्रिंट मीडिया के माध्यम से जागरूक हुए हैं।
13. अधिकांश उत्तरदाता 75% सरकार के द्वारा प्रदान की जा रही अपने पुनर्वास हेतु योजनाओं के प्रति जागरूकता ही नहीं रखते हैं, और मात्र 25% उत्तरदाता ही सरकार के द्वारा प्रदान की जा रही अपने पुनर्वास हेतु योजनाओं के प्रति जागरूकता रखते हैं।
14. मात्र 20% उत्तरदाता जागरूकता कैम्प से जागरूक हुए हैं, और 5% अखबार और पत्रिका माध्यम से जागरूक हुए हैं।
15. अधिकांश उत्तरदाता 72% उत्तरदाता मानते हैं कि मात्र सरकारी नौकरी मिलने से ही हमारा विकास हो सकता, और 2.5% यह मानते हैं कि यदि हम अपना व्यवसाय करें तो हमारा विकास हो पायेगा।
16. अधिकांश उत्तरदाता 75% सफाई कार्य को प्राथमिकता देते हैं, और मात्र 12.5% उत्तरदाता मजदूरी और कृषि (खेतिहर मजदूरी आदि) को प्राथमिकता देते हैं।
17. उत्तरदाता 52% मानते हैं, की यह काम पीढ़ी गत पीढ़ी हमारे परिवारों के लिए हस्तांतरित हो रहा है इसलिए हम सफाई कार्य को श्रम के रूप में प्राथमिकता देते हैं, और कोई भी उत्तरदाता यह स्वीकार नहीं करता कि इस काम को करने वालों को समाज में सम्मान मिलता है।

कार्य पद्धति

प्राथमिक आँकड़े एकत्रित करने के लिए शोधार्थी ने शोध के लिए चुने गए अनुसन्धान क्षेत्र में उत्तरदाताओं के साथ सहभागी अवलोकन करते हुए और interview schedule के साथ तथ्य प्राप्त किये हैं। Open ended discussion के द्वारा शोधार्थी ने

उत्तरदाताओं के विचारों को जानने का प्रयास किया है। शोधार्थी अपने अनुसंधान क्षेत्र में अपने उत्तरदाताओं के साथ लगातार संपर्क में रहा है ताकि सही तथ्य सामने आ सकें।

निष्कर्ष

इस प्रकार अध्ययन से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण के अनुसार बाल्मिकी जाति ने अपने शैक्षिक स्तर और व्यावसायिक पद्धति को बदलने का लगातार प्रयास कर रहे हैं, फिर भी उनमें से अधिकांश निरक्षर हैं और अपने पारंपरिक व्यवसाय का पालन करना जारी रखे हुए हैं। बाल्मिकी जाति के सदस्यों की जीवन शैली में थोड़े बदलाव आए हैं, जैसे– पारिवारिक संरचना, पोशाक, आहार, आभूषण, आवास पैटर्न और आधुनिक वस्तुओं का दैनिक जीवन में उपयोग आदि, उनकी जीवन शैली में बदलाव लाने वाले कारक हैं, भंगियों के बीच शिक्षा का प्रसार, उनके व्यावसायिक पैटर्न में बदलाव, आय में वृद्धि, और भंगियों के बीच सामाजिक पदानुक्रम में ऊपर जाने की प्रबल इच्छा है।

संदर्भ सूची

1. राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग, अनुसूचित जातियों के प्रति अत्याचार निवारण रिपोर्ट, नीति एवं निष्पादन प्रस्तावित हस्तक्षेप तथा राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग के लिए पहल कार्य।
2. श्रीनिवास, एम.एन., भारत के गाँव, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पटना, 2004.
3. हट्टन जे.एच., भारत में जाति प्रथारू स्वरुप कर्म और उत्पत्ति, मोती लाल बनारसी दास, दिल्ली, 2005.
4. वाल्मीकि ओम प्रकाश, जूठन, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2009.
5. राम आहूजा, सामाजिक सर्वेक्षण एवं अनुसंधान, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2002.
6. शर्मा, जी. एल., सामाजिक मुद्दे, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2015
7. District Census Handbook Rewari 2011-